देह सहित देह के सम्बन्धों को भूलना
और एक बाप को याद करना
यही है.. सच्ची गीता का सार
बाप की याद और सृष्टि चक्र फिराना
यही होता..सहज पुरुषार्थ
इससे ही विक्रम विनाश होंगे,
और चक्रवाती राजा बनेंगे
अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करना
कदम -कदम पर पद्मों की कमाई करनी ज़मा
दही-अभिमानी बनना,अच्छे संकल्प करना
कर्मेन्द्रियों से कोई उल्टा कर्म नही करना
बाप का आज्ञाकारी बन.. सफलता का तिलक लगाना
दिलशिक्स्त् नही, दिलतख्तनशीन बनना
अहम,वहम के भाव को समाप्त करो
विनाश की डेट नही,स्वयं के परिवर्तन की घड़ी निश्चित करो

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!